एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-47

****

Scanned by CamScanner

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, प्रथम वर्ष

****

प्रथम पत्र

****

तुलसीदास

****

'रामचरितमानस'- अयोध्या काण्ड

****

Scanned by CamScanner

[अयोध्या काण्ड मूल-पाठ व्याख्या/ विश्लेषण (शेष भाग-46 से आगे....)]

दो० - प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान।

तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान॥ 64॥

हे प्राणनाथ! हे दया के धाम! हे सुंदर! हे सुखों के देनेवाले! हे सुजान! हे रघुकुलरूपी कुमुद के खिलानेवाले चंद्रमा! आपके बिना स्वर्ग भी मेरे लिए नरक के समान है॥ 64॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई। प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई॥

सासु ससुर गुर सजन सहाई। सुत सुंदर सुसील सुखदाई॥

Scanned by CamScanner

माता, पिता, बहन, प्यारा भाई, प्यारा परिवार, मित्रों का समुदाय, सास, ससुर, गुरु, स्वजन (बंधु-बांधव), सहायक और सुंदर, सुशील और सुख देनेवाला पुत्र - ।

जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते। पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते॥
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू। पति बिहीन सबु सोक समाजू॥

हे नाथ! जहाँ तक स्नेह और नाते हैं, पति के बिना स्त्री को सूर्य से भी बढ़कर तपानेवाले हैं। शरीर, धन, घर, पृथ्वी, नगर और राज्य, पति के बिना स्त्री के लिए यह सब शोक का समाज है।

भोग रोगसम भूषन भारू। जम जातना सरिस संसारू॥
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं। मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं॥

Scanned by CamScanner

भोग रोग के समान हैं, गहने भार रूप हैं और संसार यम-यातना (नरक की पीड़ा) के समान है। हे प्राणनाथ! आपके बिना जगत में मुझे कहीं कुछ भी सुखदायी नहीं है।

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें। सरद बिमल बिधु बदनु निहारें॥

जैसे बिना जीव के देह और बिना जल के नदी, वैसे ही हे नाथ! बिना पुरुष के स्त्री है। हे नाथ! आपके साथ रहकर आपका शरद- (पूर्णिमा) के निर्मल चंद्रमा के समान मुख देखने से मुझे समस्त सुख प्राप्त होंगे।

दो० - खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल॥ 65॥

Scanned by CamScanner

हे नाथ! आपके साथ पक्षी और पशु ही मेरे कुटुंबी होंगे, वन ही नगर और वृक्षों की छाल ही निर्मल वस्त्र होंगे और पर्णकुटी (पत्तों की बनी झोपड़ी) ही स्वर्ग के समान सुखों की मूल होगी॥ 65॥

बनदेबीं बनदेव उदारा। करिहहिं सासु ससुर सम सारा॥

कुस किसलय साथरी सुहाई। प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई॥

उदार हृदय के वनदेवी और वनदेवता ही सास-ससुर के समान मेरी सार-सँभार करेंगे, और कुशा और पत्तों की सुंदर साथरी (बिछौना) ही प्रभु के साथ कामदेव की मनोहर तोशक के समान होगी।

कंद मूल फल अमिअ अहारू। अवध सौध सत सरिस पहारू॥

छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी। रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी॥

Scanned by CamScanner

कंद, मूल और फल ही अमृत के समान आहार होंगे और (वन के) पहाड़ ही अयोध्या के सैकड़ों राजमहलों के समान होंगे। क्षण-क्षण में प्रभु के चरण कमलों को देख-देखकर मैं ऐसी आनंदित रहूँगी जैसे दिन में चकवी रहती है।

बन दुख नाथ कहे बहुतेरे। भय बिषाद परिताप घनेरे॥
प्रभु बियोग लवलेस समाना। सब मिलि होहिं न कृपानिधाना॥

हे नाथ! आपने वन के बहुत-से दुःख और बहुत-से भय, विषाद और संताप कहे। परंतु हे कृपानिधान! वे सब मिलकर भी प्रभु (आप) के वियोग (से होनेवाले दुःख) के लवलेश के समान भी नहीं हो सकते।

अस जियँ जानि सुजान सिरोमनि। लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी। करुनामय उर अंतरजामी॥

Scanned by CamScanner

ऐसा जी में जानकर, हे सुजान शिरोमणि! आप मुझे साथ ले लीजिए, यहाँ न छोड़िए। हे स्वामी! मैं अधिक क्या विनती करूँ? आप करुणामय हैं और सबके हृदय के अंदर की जाननेवाले हैं।

(शेष अध्ययन व विश्लेषण भाग-48 में....)

Scanned by CamScanner